सत्यवचन

प्रोग्राम नं० 41

उत्पत्ति 26:5–27:17

प्रिय मित्रो,

प्रभु यीशु मसीह के पवित्र और मधुर नाम में आपको नमस्कार! मुझे खुशी है, कि फिर से, हम परमेश्वर के जीवित वचन के साथ, सीखने के लिए तैयार हैं। परमेश्वर का धन्यवाद हो, इस समय के लिए।

आइए हम आज के अध्ययन को उत्पत्ति की पुस्तक उसके 26 अध्याय से आरम्भ करें। पिछले अध्ययन में हमने पद 3 और 4 को देखा था। आज हम उत्पत्ति 26:5 पद को पढ़कर अपने अध्ययन में आगे बढ़ें। आइए पढ़ें,

उत्पत्ति 26:5

> *"क्योंकि अब्राहम ने मेरी मानी, और जो मैं ने उसे सौंपा था उसको और मेरी आज्ञाओं विधियों, और व्यवस्था का पालन किया।"*

मित्रों, इस समय तक परमेश्वर ने मूसा की व्यवस्था नहीं दी है, इसलिए अब्राहम, मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं था। जो भी हो, महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि परमेश्वर ने जो कुछ भी अब्राहम से कहा, उसने उस पर विश्वास किया। और उसके अनुसार कार्य भी किया। उसने अपने विश्वास को क्रिया द्वारा प्रदर्शित किया।

मित्रों, आज हमारे मध्य में बहुत से लोग हैं जो यह शिकायत करते हैं कि उनके मसीही जीवन में वास्तविकता की कमी है। एक महिला मेरे साथ बातें करने आई और कहने लगी कि मैं विश्वास तो करती हूँ परन्तु मैं पूर्ण रूप से भरोसा नहीं कर पाती हूँ। कहने का मतलब यह है कि उसने कुछ भी महसूस नहीं किया। यह किस प्रकार की अनिश्चितता है! मुझे अधिक बात करने की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि उसके विश्वास में क्रिया, ही नहीं थी। वह किसी कोने में बैठकर कहती है, कि मैं विश्वास करती हूँ और यह उम्मीद करे कि कोई बड़ा चमत्कार हो जो कभी नहीं होता है। जब आप परमेश्वर पर विश्वास करते हैं तो उसके प्रतिज्ञा के अनुसार चलें भी। मित्रों, यदि कोई मुझे फोन करके कहता है कि मैं ने आपके बैंक के खाते में दस हज़ार रूपया जमा किया है, कृपया आज जाकर उसे निकाल लें। तो क्या आप सोचते हैं कि मैं अपने घर में बैठकर पूरे दिन आराम करूँगा? मेरे मित्रों, यदि आप मुझे जानते तो समझ जाते कि, आपने फोन रखा, और मैं अपना स्कूटर लेकर बैंक के लिए रवाना हो गया।

विश्वास वही है जिसमें आप क्रियान्वित होते हैं। विश्वास कुछ इस प्रकार है जिस पर आप कदम बढ़ाते हैं, अब्राहम ने विश्वास किया और परमेश्वर ने उसे धर्मी गिना। अब परमेश्वर इसहाक से यही कह रहे हैं कि वह उसे भी उसके पिता के समान देखना चाहते हैं। लेकिन हम आगे देखते हैं कि इसहाक अपनी पत्नी रिबका के रिश्ते को गलत रीति से प्रस्तुत करता है।

हम उत्पत्ति 26:6 में पढ़ते हैं,

> *"अतः इसहाक गरार में रह गया।"*

गरार, यह दक्षिण क्षेत्र में है, जहाँ अब्राहम और इसहाक दोनों दक्षिण प्रदेश में रहते थे, जो इस देश का ही एक भाग है। वास्तव में अब्राहम शकेम के उत्तरी भाग तक आया। परन्तु वह हेब्रोन के दक्षिण भाग में ही रहने लगा। "यह सहभागिता या सम्पर्क का स्थान था।"

आगे हम उत्पत्ति 26:7 पद को पढ़ते हैं,

> *"जब उस स्थान के लोगों ने उसकी पत्नी के विषय में पूछा, तब उस ने यह सोचकर कि यदि मैं उसको अपनी पत्नी कहूँ, तो यहाँ के लोग रिबका के कारण जो परम सुन्दरी है मुझ को मार डालेंगे, उत्तर दिया, वह तो मेरी बहन है।"*

यहाँ पर हम देखते हैं कि इसहाक भी अपने पिता के पाप को दोहरा रहा है। परमेश्वर ने उसे चेतावनी दी थी कि वह मिस्र देश को न जाए। इसलिए वह मिस्र देश में नहीं गया, लेकिन उसके बदले में वह गरार चला गया। गरार में उसने देखा होगा, कि लोग रिबका को तिर्छी नज़र से देख रहे हैं, तो उसने, उससे कहा, कि, "उनको तू यह कहना कि तू मेरी बहन है, पत्नी नहीं।" यहाँ अब्राहम और इसहाक के बीच में एक अन्तर है कि अब्राहम ने आधा झूठ कहा, पर इसहाक ने पूरा झूठ कहा। मानो पूरे कपड़े को बीच में से काटा गया हो।

इसके बाद हम उत्पत्ति 26:8 पद को पढ़ते हैं,

> *"जब उसको वहाँ रहते बहुत दिन बीत गए, तब एक दिन पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक ने खिड़की में से झाँकके क्या देखा, कि इसहाक अपनी पत्नी रिबका के साथ क्रीड़ा कर रहा है।"*

मैं सोचता हूँ कि वे दोनों एक साथ हँस बोल और खेल रहे थे।

उत्पत्ति 26:9–10 पद में लिखा है–आगे

> *"तब अबीमेलेक ने इसहाक को बुलवाकर कहा, वह तो निश्चय तेरी पत्नी है; फिर तू ने क्योंकर उसको अपनी बहन कहा? इसहाक ने उत्तर दिया, मैं ने सोचा था, कि ऐसा न हो*

कि उसके कारण मेरी मृत्यु हो।

अबीमेलेक ने कहा, तू ने हम से यह क्या किया? ऐसे तो प्रजा में से कोई तेरी पत्नी के साथ सहज से कुकर्म कर सकता, और तू हम को पाप में फँसाता।"

इसहाक ने उन लोगों को खतरे में डाल दिया कि वे पाप करें। तब अबीमेलेक ने आगे कहा,

उत्पत्ति 26:11 पद में,

"और अबीमेलेक ने अपनी सारी प्रजा को आज्ञा दी, कि जो कोई उस पुरूष को वा उस स्त्री को छूएगा, सो निश्चय मार डाला जाएगा।"

अबीमेलेक इसहाक का एक अच्छा मित्र बन गया। वहाँ के लोग इसहाक का आदर करते थे, जैसे उसके पिता को मिलता था। दोनों ही व्यक्ति असाधारण थे। यहाँ पर मैं इसलिए ऐसा कह रहा हूँ क्योंकि दूसरे अध्याय में हम इसहाक के प्रभाव को नहीं देख पाएँगे, कि वह एक असाधारण व्यक्ति है। लेकिन आगे पद में हम देखते हैं कि वह धनवान व्यक्ति बन जाता है,

उत्पत्ति 26:12

"फिर इसहाक ने उस देश में जोता बोया, और उसी वर्ष में सौ गुणा फल पाया : और यहोवा ने उसको आशीष दी।"

मित्रों, यहाँ पर हम देखते हैं कि परमेश्वर उसके साथ हैं। यही वह आशीष है, जिसकी परमेश्वर ने इन लोगों के लिए प्रतिज्ञा की थी, जिस दिन उसने अब्राहम को बुलाया था और वो एक भौतिक आशीष थी। बाद में जब परमेश्वर उन्हें, प्रतिज्ञा के देश में ले जाएगा, तो उसने उनसे कहा कि वह उनकी टोकरियों को आशीषित करेंगे। अर्थात् उनकी टोकरियाँ फलों से भरी रहेंगी। जब वे परमेश्वर की सहभागिता में चलते रहे तब परमेश्वर ने उस प्रतिज्ञा को पूरा किया।

हम इस बात को याद रखें कि, वह हमसे उस आशीष की प्रतिज्ञा नहीं कर रहे हैं। उसने हमें आत्मिक आशीष देने की प्रतिज्ञा की है, हमें कहा गया है कि हम सब प्रकार की आत्मिक आशीषों से आशीषित किए जाएँगे। और आज हमारा भाग वही है। परन्तु उस आशीष की भी भार्त वही है, और यह हम सबकी, परमेश्वर के साथ संगति पर निर्भर करता है। यदि आप उसे अनुमति देंगे तो वह आपको बहुतायत की आशीष देंगे। और आत्मिक रूप में बलवन्त करेंगे। हम यहाँ पर पाते हैं कि इसहाक बड़े पैमाने पर आशीषित हुआ।

उत्पत्ति 26:13 पद में लिखा है,

"और वह बढ़ा और उसकी उन्नति होती चली गई, यहाँ तक कि वह अति महान पुरूष हो

गया।"

आप इस सत्य को मत भूलिए कि इसहाक अति संपन्न हो गया। उसकी फसल सौ गुणा अपज देती है। हम में से कुछ लोगों को लगता है अब्राहम, और याकूब बहुत ही प्रभावी/असाधारण लोग थे, परन्तु इसहाक नहीं। मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि इसहाक भी एक असाधारण व्यक्ति था।

मित्रों, यह सार्थक है कि इसहाक का जीवन, अब्राहम के साथ जुड़ा हुआ है। इसहाक का जन्म और उसका जीवन, अब्राहम के अनुभव के साथ आपस में गुँथे हुए हैं। यद्यपि जब इसहाक को बलि के लिए वेदी पर चढ़ाया गया तो वह महत्त्वपूर्ण था। फिर भी हम यहाँ पर अब्राहम और इसहाक को एक साथ देखते हैं। क्यों ये इस प्रकार प्रस्तुत किए गए? मित्रों, हमने पहले ही इस बात को देखा, कि जो कुछ भी इनके जीवन में हुआ, वह हमारे लिए एक नमूना या उदाहरण ठहरे। यह एक अद्‌भुत तस्वीर को दर्शाता है जो प्रभु यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के बीच की घनिष्ठता है। यूहन्ना 14:9 में यीशु मसीह ने कहा, "जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है।" और महायाजक की प्रार्थना में यीशु मसीह कहते हैं, यूहन्ना 17:4 पद में, "जो काम तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।" उसने यह भी कहा, यूहन्ना 5:17 पद में, "मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं स्वयं भी काम करता हूँ।" इसलिए यह बहुत ही उचित है कि अब्राहम और इसहाक की कहानी, दोनों को हम एक साथ देखें।

मित्रों, हम इस अध्याय में देखते हैं कि इसहाक अपने दोनों पैरों पर खड़ा तो है पर वह उतना आकर्षक नहीं लग रहा है। वह अपनी कमज़ोरी को प्रदर्शित करता, और अपने पिता के पाप को ही दोहराता है, चाहे जो भी हो, परमेश्वर का वचन इस बात को स्पष्ट करता है कि इसहाक उस देश में संपन्न व्यक्ति था।

उत्पत्ति 26:14 पद में लिखा हैं,

> *"जब उसके भेड़–बकरी, गाय–बैल, और बहुत से दास–दासियाँ हुई, तब पलिश्ती उस से डाह करने लगे।"*

पलिश्ती लोग इसहाक की संपन्नता को सह नहीं पा रहे थे।

उत्पत्ति 26:15 पद में हम आगे पढ़ते हैं,

> *"जब जितने कुओं को उसके पिता अब्राहम के दासों ने अब्राहम के जीते जी खोदा था, उनको पलिश्तियों ने मिट्टी से भर दिया।"*

अब्राहम ने उस देश में बहुत कुएँ खुदवाए थे और अब इसहाक यहाँ आया तो वे सारे कुएँ इसहाक के

हो गए। परन्तु जब वह सुबह उठकर मैदान में गया तो देखा कि सभी कुएँ मिट्टी से भर दिए गए हैं। और यह काम पलिश्तियों के द्वारा किया गया था। और यहीं पर पहली बार, पलिश्तियों के साथ शत्रुता की बात बताई गई है। और यही शत्रुता दाऊद के दिनों में एक बड़े युद्ध के रूप में बदल गई।

उत्पत्ति 26:16 पद में पढ़ते हैं,

> *"तब अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, हमारे पास से चला जा; क्योंकि तू हम से बहुत सामर्थी हो गया है।"*

प्रिय मित्रों, यहाँ पर इसहाक के महत्त्व की तरफ ध्यान दीजिए। वह एक विशेष व्यक्ति है।

आगे हम उत्पत्ति 26:17 पद को पढ़ते हैं,

> *"अतः इसहाक वहाँ से चला गया, और गरार के नाले में तम्बू खड़ा करके वहाँ रहने लगा।"*

मित्रों, अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, कि अब तुम एक बड़ी समस्या को उत्पन्न कर रहे हो, और तुम्हारे लिए यही अच्छा होगा कि तुम इस स्थान को छोड़कर चले जाओ। मित्रों, अबीमेलेक के जीवन में हम देखते हैं कि वह इसहाक का आदर करता था। जैसे की हम देखते हैं।

आगे हम देखते हैं कि इसहाक गरार में कुआँ खोदता है। अब यह इसहाक के जीवन का एक हिस्सा है, जो उसकी कमज़ोरी सी लगती है, परन्तु वो नहीं है। यहाँ पर आप ध्यान दीजिए कि इसहाक उसी स्थान पर लौट गया है, जहाँ पहले उसका पिता अब्राहम रहता था।

उत्पत्ति 26:18–20 में हम पढ़ते हैं,

> *"तब जो कुएँ उसके पिता अब्राहम के दिनों में खोदे गए थे, और अब्राहम के मरने के बाद पलिश्तियों ने भर दिए थे, उनको इसहाक ने फिर से खुदवाया; और उनके वे ही नाम रखे, जो उसके पिता ने रखे थे।*
>
> *फिर इसहाक के दासों को नाले में खोदते–खोदते बहते जल का एक सोता मिला।*
>
> *तब गरारी चरवाहों ने इसहाक के चरवाहों से झगड़ा किया, और कहा, कि यह जल हमारा है। इसलिए उसने उस कुएँ का नाम एसेक रखा इसलिये कि वे उससे झगड़े थे।"*

मित्रों, यह उस बढ़ते हुए संघर्ष को प्रगट करता है। मैं महसूस करता हूँ कि यहाँ पर पानी परमेश्वर के वचन का चित्र है। और हमें इससे बहुत अधिक पीना चाहिए। यह "वचन का जल" भी कहलाता है, और यह पीने के लिए होता है, जो हमारी प्यास को बुझाता है, और यह धोने के लिए भी होता है। यीशु मसीह ने कहा, कि हम उसके कहे गए वचन के द्वारा शुद्ध किए गए हैं।

पानी जीवन के लिए अति आवश्यक है, और आप बिना पानी के जीवन नहीं जी सकते हैं। आप अरब देशों में जाकर उन रेगिस्तान और निर्जन स्थानों को देख सकते हैं, जहाँ पर पानी नहीं है, और अचानक से आप एक क्षेत्र में हरियाली देखते हैं, तो आप आश्चर्य करते हैं कि यहाँ पर क्या हो रहा है। इसका उत्तर या वर्णन सिर्फ पानी ही है।

और मेरे प्रिय मित्रों, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आज पानी ही है, जो परमेश्वर की सन्तानों के बीच की भिन्नता को दर्शाता है, परमेश्वर के वचन का जल (पानी)। जो लोग परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं उनके और जो अध्ययन नहीं करते हैं उनके जीवन में एक बड़ी भिन्नता नज़र आती है। इसके लिए उन्हें हमेशा संघर्ष करना पड़ता है। मैं सोचता हूँ कि यदि आप परमेश्वर के वचन का अध्ययन प्रतिदिन करना चाहते हैं, तो इसके लिए आपको हमेशा एक कीमत चुकानी पड़ेगी। क्योंकि शैतान आपको बाइबल पढ़ना छोड़कर कोई भी कार्य करने के लिए नहीं रोकेगा। अर्थात् शैतान नहीं चाहता है कि आप परमेश्वर के वचन को पढ़ें और सच्चाई से परिचित हों।

मित्रों, अब हम उत्पत्ति 26:21, 22 पदों को पढ़ेंगे,

> *"फिर उन्होंने दूसरा कुआँ खोदा; और उन्होंने उसके लिये भी झगड़ा किया, अतः उस ने उसका नाम सित्ना रखा।*
>
> *तब उसने वहाँ से कूच करके एक और कुआँ खुदवाया; और उसके लिये उन्होंने झगड़ा न किया; इसलिए उसने उसका नाम यह कहकर रहोबोत रखा, कि अब तो यहोवा ने हमारे लिये बहुत स्थान दिया है, और हम इस देश में फूलें–फलेंगे।"*

तब उसने उस कुएँ का नाम "रहोबोत" रखा। इसका अर्थ है कि "हमारे लिए वहाँ स्थान है।" इससे पहले वह कुआँ खोदता था और पलिश्ती उसे ले लेते थे। इसलिए उसे वहाँ से दूसरी जगह पर जाकर पुनः कुआँ खोदना पड़ता था। और वे उसे भी ले लेते थे। इस प्रकार से वह निरन्तर बढ़ता ही जा रहा था। यह इस बात का निश्चय करता है, कि इसहाक एक धैर्यवान और शान्ति प्रिय व्यक्ति था। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि दाऊद इस प्रकार नहीं कर सकता था और न ही पतरस ऐसा करता। यदि आप सत्य जानना चाहते हैं, तो मैं भी ऐसा नहीं करता। हम सभों के लिए यहाँ पर एक बड़ी सीख है। विशेषकर यह तब लागू होता है, जब हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं, और अपने जीवन में लागू करते हैं, तब।

मित्रों, आगे हम देखते हैं कि इसहाक बेर्शेबा को जाता है, और परमेश्वर उसे सांत्वना देता है।

तो आइए हम उत्पत्ति 26:23, 24 पद को पढ़ें,

> *"वहाँ से वह बेर्शेबा को गया। और उसी दिन यहोवा ने रात को उसे दर्शन देकर कहा,*

मैं तेरे पिता अब्राहम का परमेश्वर हूँ; मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, और अपने दास अब्राहम के कारण तुझे आशीष दूँगा, और तेरा वंश बढ़ाऊँगा"

परमेश्वर इसहाक को सांत्वना देने के लिए, उसे दर्शन देते हैं। यूसुफ को छोड़कर परमेश्वर ने सभी मूलपुरुषों (पूर्वजों) को दर्शन दिया। उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब को भी दर्शन दिया।

उत्पत्ति 26:25 पद में लिखा हैं,

"तब उस ने वहाँ एक वेदी बनाई, और यहोवा से प्रार्थना की, और अपना तम्बू वहीं खड़ा किया; और वहाँ इसहाक के दासों ने एक कुआँ खोदा।"

वह फिर कुआँ खोदते हुए आगे बढ़ता है। आप हमेशा इसहाक के साथ एक कुआँ पाएँगे और हमेशा अब्राहम के साथ वेदी पाएँगे, और याकूब के साथ आप तम्बू देख सकते हैं, जिसे हम लोग बाद में देखेंगे। आगे हम देखते हैं कि इसहाक अबीमेलेक के साथ वाचा बाँधता है।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 26:26–29 पद तक,

"तब अबीमेलेक अपने मित्र अहुज्जत, और अपने सेनापति पीकोल को संग लेकर, गरार से उसके पास गया।

इसहाक ने उन से कहा, तुम ने मुझ से बैर करके अपने बीच से निकाल दिया था; अब मेरे पास क्यों आए हो?

उन्होंने कहा, हम ने तो प्रत्यक्ष देखा है, कि यहोवा तेरे साथ रहता है : इसलिए हम ने सोचा, कि तू तो यहोवा की ओर से धन्य है, अतः हमारे तेरे बीच में शपथ खाई जाए, और हम तुझ से इस विषय की वाचा बन्धाएँ;

कि जैसे हम ने तुझे नहीं छूआ, वरन तेरे साथ निरी भलाई की है, और तुझ को कुशल क्षेम से विदा किया, उसके अनुसार तू भी हम से कोई बुराई न करेगा।"

मित्रों, यद्यपि इसहाक इन गरारवासियों से बातचीत करने में कमज़ोर लगता है, परन्तु गरार का राजा उससे बहुत प्रभावित होता है, और यही कारण है कि वह गरार से बेर्शेबा में इसहाक के पास आता है। ताकि उसके साथ अपने सम्बन्ध स्थापित करे। इसहाक का प्रभाव उस देश में एक कमज़ोर व्यक्ति के रूप में नहीं था।

मित्रों, अब आइए हम उत्पत्ति 26:34, 35 पद को पढ़ें,

"जब एसाव चालीस वर्ष का हुआ, तब उस ने हित्ती बेरी की बेटी यहूदीत, और हित्ती एलोन

की बेटी बाशमत को ब्याह लिया।

और इन स्त्रियों के कारण इसहाक और रिबका के मन को खेद हुआ।"

मित्रों, यहाँ पर यह अध्याय समाप्त होता है और हम अगले अध्याय से अपना अध्ययन जारी रखेंगे, जिसमें हम याकूब के सही रूप व रंग को देखेंगे।

इस अध्याय का विषय है "याकूब और रिबका, इसहाक के आशीर्वाद को याकूब के लिए प्राप्त करने के लिए गुप्त रूप से सहयोग करती है।" यह आशीष इसहाक ने एसाव को देने के लिए रखी थी। मित्रों, आप ध्यान दीजिए कि याकूब अपने पिता के आशीर्वाद को प्राप्त करना चाहता है। वह इस बात को जानता था कि परमेश्वर ने उसकी माँ से प्रतिज्ञा की है कि बड़ा छोटे का दास होगा या सेवा करेगा। इसलिए आशीष पहले से ही उसकी है। जो भी हो, उसने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया। उसकी माँ, रिबका ने भी परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया। स्पश्ट रूप से इसहाक ने जो उसका पिता है, परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया। या उसने कभी भी कोशिश नहीं की, कि अपने बड़े बेटे को छोड़कर छोटे बेटे को आशीर्वाद दे। वह अपनी ही इच्छा पर चला, जो परमेश्वर के वचन के विरुद्ध और भिन्न था। प्रिय मित्रों, याकूब ने पहलौठेपन के अधिकार व आशीष को पाने का जो तरीका अपनाया वह किसी भी रीति से स्वीकार योग्य नहीं है। उसने धोखा और छल का प्रयोग किया है। उसने जो किया वह घृणित था। परमेश्वर ने इसे अनदेखा नहीं किया। उसने सिर्फ एक बार सारा और अब्राहम के कार्य को अनदेखा किया था, जो उन्होंने हाजिरा और इश्माएल के साथ किया था। परमेश्वर ने याकूब की चतुराई और धोखेबाज़ी को प्रयोग नहीं किया। आगे हम देखेंगे कि परमेश्वर इस व्यक्ति के साथ एक निश्चित रूप से व्यवहार करते हैं। याकूब को अपने पापों की कीमत चुकानी पड़ी, उसी सिक्के में, जिससे उसने पाप किया था। जैसे–जैसे हम इस अध्याय में आगे बढ़ेंगे, आप इन सब बातों को देख सकते हैं।

26 अध्याय एसाव के साथ समाप्त होता है, जो 40 वर्ष का है और दो हित्ती स्त्रियों से विवाह करता है। जिससे इसहाक और रिबका को दुःख पहुँचता है। इसलिए अब इसहाक और रिबका, को यह बात समझ में आती है, कि यदि याकूब के लिए हित्ती या पलिश्ती बहू नहीं चाहिए तो उसे हारान उसके मामा लाबान के पास भेजना होगा, जहाँ से इसहाक के लिए अब्राहम के खानदान से या परिवार से बहू लाई गई थी, जो हारान देश में है।

आगे हम देखते हैं कि इसहाक, एसाव को आशीष देने की प्रतिज्ञा करता है,

तो आइए हम उत्पत्ति 27:1–4 पदों को पढ़ें,

"जब इसहाक बूढ़ा हो गया, और उसकी आँखें ऐसी धुंधली पड़ गई, कि उसको सूझता न था, तब उस ने अपने जेठे पुत्र एसाव को बुलाकर कहा, हे मेरे पुत्र; उस ने कहा, क्या

आज्ञा।

उसने कहा, सुन, मैं तो बूढ़ा हो गया हूँ, और नहीं जानता कि मेरी मृत्यु का दिन कब होगा,

इसलिए अब तू अपना तरकश और धनुष आदि हथियार लेकर मैदान में जा, और मेरे लिये हिरन का अहेर कर ले आ।

तब मेरी रूचि के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बनाकर मेरे पास ले आना, कि मै उसे खाकर मरने से पहले तुझे जी भर के आशीर्वाद दूँ।"

मित्रों, हमने देखा कि इसहाक एक महान् और प्रतिष्ठित व्यक्ति था। अबीमेलेक और पलिश्ती उससे सन्धि करने के लिए आए क्योंकि वे उससे डरते थे। वह धैर्यवान और शान्तिप्रिय था, परन्तु वह प्रभावपूर्ण और सामर्थवान भी था।

मित्रों, यहाँ पर जो कुछ भी हो, वह अपनी शारीरिक दुर्बलता को प्रगट करता है, कि उसके जीवन भर वह एसाव से ही अधिक प्रेम करता रहा और रिबका याकूब को अधिक प्रेम करती रही। एसाव एक अच्छा शिकारी था इसलिए हमेशा वह घर से बाहर रहता और कभी हिरण व अन्य पशुओं का शिकार कर लाता था। और आग में भूनकर अपने पिता इसहाक को देता था, और वह बूढ़ा इसहाक उसका आनन्द लेता था। अब इसहाक काफी बूढ़ा हो गया है, इसलिए वह अपने प्रिय बेटे एसाव को आशीष देना चाहता है। वह इस बात को भली–भाँति जानता है कि परमेश्वर ने कहा है कि बड़ा, छोटे की सेवा करेगा। फिर भी वह नज़रअन्दाज़ करते हुए एसाव को आशीष देना चाहता है, इसलिए वह एसाव से कहता है बाहर जाकर उसके लिए कोई शिकार ले आए ताकि वह उसे आशीर्वाद दे। मित्रों, हम यहाँ पर इस परिवार के प्रकाशन को देख सकते हैं, कि किस प्रकार का परिवार है। क्या आपने इस बात पर ध्यान दिया, कि जब से हमने इस अध्याय मे प्रवेश किया है यह परिवार संघर्ष कर रहा है? अब्राहम के परिवार में भी संघर्ष था, सिर्फ हाजिरा के कारण से। और अब इस परिवार में संघर्ष या अनबन, इन दो जुड़वा बेटों के कारण से है।

मित्रों आगे हम देखते हैं कि रिबका अपने प्रिय बेटे याकूब के साथ मिलकर बड़े बेटे एसाव को धोखा देने की योजना बनाती है।

तो आइए हम उत्पत्ति 27:5–8 पदों को पढ़ें,

"तब एसाव अहेर करने को मैदान में गया। जब इसहाक एसाव से यह बात कह रहा था, तब रिबका सुन रही थी।

इसलिए उस ने अपने पुत्र याकूब से कहा सुन, मैंने तेरे पिता को तेरे भाई एसाव से यह कहते सुना,

कि तू मेरे लिये अहेर करके उसका स्वादिष्ट भोजन बना, कि मैं उसे खाकर तुझे यहोवा के आगे मरने से पहिले आशीर्वाद दूँ

इसलिए अब, हे मेरे पुत्र, मेरी सुन, और यह आज्ञा मान,"

इसहाक जो कुछ भी अपने बेटे एसाव से कह रहा था, रिबका सुन रही थी। और याकूब उसका प्रिय था। इसलिए वह धोखापूर्ण योजना बनाती है, और यह पूर्ण रूप से धोखा देना ही है, इसलिए इसे किसी भी रीति से क्षमा नहीं किया जा सकता था।

इन सारी बातों को परमेश्वर इतिहास की पुस्तक में संग्रहित कर रहे थे। परन्तु वे इसकी निन्दा करते हैं। इसे हम आगे देखेंगे। मित्रों, आप यहाँ पर की गई बातों को याद रखें। और बाद में आप देखेंगे कि समस्या याकूब के घर में प्रवेश करती है। और उसके लिए उलझन का कारण बन जाती है। इस समय रिबका याकूब से आगे कहती है,

उत्पत्ति 27:9–11 पद में,

"कि बकरियों के पास जाकर बकरियों के दो अच्छे–अच्छे बच्चे ले आ; और मैं तेरे पिता के लिये उसकी रूचि के अनुसार उन के मांस का स्वादिष्ट भोजन बनाऊँगी।

तब तू उसको अपने पिता के पास ले जाना, कि वह उसे खाकर मरने से पहले तुझ को आशीर्वाद दे।

याकूब ने अपनी माता रिबका से कहा, सुन, मेरा भाई एसाव तो रोंआर पुरूष है, और मैं रोमहीन पुरूष हूँ।"

यहाँ पर हम देखते हैं कि एसाव न सिर्फ गोरा और शिकारी व्यक्ति था, परन्तु वह रोएंदार व्यक्ति था। उसके पूरे शरीर पर बाल थे।

उत्पत्ति 27:12 पद में हम पढ़ते हैं,

"कदाचित् मेरा पिता मुझे टटोलने लगे, तो मैं उसकी दृष्टि में ठग ठहरूँगा; और आशीष के बदले शाप ही कमाऊँगा।"

मित्रों, यहाँ पर हम देखते हैं कि याकूब न केवल धोखेबाज़ लगता है परन्तु वह धोखेबाज़ ही है।

उसके आगे हम उत्पत्ति 27:13–17 पद में पढ़ते हैं,

"उसकी माता ने उस से कहा, हे मेरे, पुत्र, शाप तुझ पर नहीं मुझी पर पड़े, तू केवल मेरी सुन, और जाकर वे बच्चे मेरे पास ले आ।

तब याकूब जाकर उनको अपनी माता के पास ले आया, और माता ने उसके पिता की रूचि के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बना दिया।

तब रिबका ने अपने पहलौठे पुत्र एसाव के सुन्दर वस्त्र, जो उसके पास घर में थे, लेकर अपने लहुरे पुत्र याकूब को पहना दिए।

और बकरियों के बच्चों की खालों को उसके हाथों में और उसके चिकने गले में लपेट दिया।

और वह स्वादिष्ट भोजन और अपनी बनाई हुई रोटी भी अपने पुत्र याकूब के हाथ में दे दी।"

मित्रों, इस पर मैं न चाहते हुए भी कुछ कहना चाहूँगा। रिबका ने बकरी के बच्चे की खाल को याकूब के हाथ और गर्दन में लगा दी ताकि जब उसका पिता इसहाक उसे छूए तो उसे लगे कि यह एसाव है। उसने उसे एसाव के वस्त्र भी पहनाए ताकि उसमें से एसाव की सी महक आए। वास्तव में जो गन्धहर एसाव प्रयोग करता था वह उतना प्रभावशाली नहीं था। मैं सोचता हूँ कि वो उस कहानी के समान था, जिसे मैंने कुछ वर्षों पहले सुना था। कि दो व्यक्ति एक कम्पनी में कार्य करते थे, जहाँ बहुत पास–पास रहकर काम करना पड़ता था। उसमें से एक ने दूसरे से कहा, "कि, मैं सोचता हूँ, कि हम दोनों में से, किसी एक का गन्धहर, जल्दी काम करना छोड़ रहा है।" तब दूसरे ने कहा, "हो सकता है कि यह तुम्हारा ही है, क्योंकि मैं कोई भी गन्धहर प्रयोग नहीं करता हूँ।" मित्रों, मैं भी सोचता हूँ, कि एसाव कोई गन्धहर उपयोग नहीं करता था। मैं स्पष्ट नहीं कह सकता कि एसाव हर दिन नहाता भी था या नहीं। इसलिए, यदि आपने उसे नहीं भी देखा है, तौभी आप उसकी गन्ध ले सकते हैं। कहने का अर्थ है कि उसके देह की गन्ध से उसके पिता उसे पहचान लेता था।

मित्रों, आज हमारा समय यहीं पर समाप्त होता है, हम अपने अध्ययन को यहीं पर समाप्त करते हैं, और अगले अध्ययन में इसी विचार को बढ़ाते हुए हम फिर मिलेंगे। तब तक आप सब अपना ख्याल रखें। प्रभु आपको आशीष दें।